जिनवाणी की महिमा एवं स्वाध्याय की प्रेरणा

१. बाह्याभ्यंतरभेदेन द्विविधेऽपि तपोविधौ।
अज्ञानप्रतिपक्षत्वात् **स्वाध्यायः परमं तपः**।। ६९ ।। – हरिवंशपुराण, सर्ग १

अर्थ – बाह्य और आभ्यंतर दो प्रकार के तप में अज्ञान का विरोधी होने से **स्वाध्याय ही उत्कृष्ट तप है**।

२. निरस्तसर्वाक्षकषायवृत्तिर्विधीयते येन शरीरीवर्गः।
प्ररूढजन्मांकुरशोषपूषा **स्वाध्यायतोऽस्ति ततो न योगः**।। ८७ ।। – अमितगतिश्रावकाचार, परिच्छेद १३

अर्थ – जिससे प्राणी समस्त इन्द्रियविषय और कषाय की प्रवृत्ति पर विजय प्राप्त करता है और जो जन्मसंतति के अंकुर की शुष्क करने में सूर्य के समान है, ऐसे **स्वाध्याय से बढ़कर दूसरा कोई योग नहीं है**।

३. प्रवचनसार गाथा ८६, २३२–२४१
४. कोटि जन्म तप तपै ज्ञान बिन कर्म झरै जे।
ज्ञानी के छिनमांहि त्रिगुप्ति तैं सहज टरैं ते।। – छहढ़ाला
५. नियमसार गाथा ५३
६. समयसार कलश ४,२८ की टीका, गाथा ४१५
७. आत्मानुशासन ३
८. ... तुम धुनि ह्वै सुनि विभ्रम नशाय..
... तुम शासन सेय अमेय जीव शिव गये जाहिं, जैहैं सदीव। – दर्शन स्तुति
९. ... तिन अहित हरण सुवचन जिनके परम शीतलता भरे।
... रवि शशि न हरे सो तम हराय, सो शास्त्र नमो बहु प्रीति ल्याय। – देव–शास्त्र–गुरु पूजन
१०. ... उस श्रीजिनवाणी में होता तत्त्वों का सुंदरतम दर्शन।
... उस पावन नौका पर लाखों प्राणी भववारिधि तिरते हैं। – देव–शास्त्र–गुरु पूजन
११. ... शब्द ब्रह्म जिनवाणी। – देव–शास्त्र–गुरु पूजन
१२. षट् आवश्यक में व अन्तरंग तप में भी स्वाध्याय शामिल है।
१३. मोक्षमार्गप्रकाशक पृष्ठ क्रमांक २०, ३४९ 'अध्यात्म आगम ग्रंथों का अभ्यास रखना' – रहस्यपूर्ण चिट्ठी
१४. सत्तास्वरूप पेज २,३,४
१५. तत्प्रति प्रीति चित्तेन... – पद्मनंदि पञ्चविंशतिका, एकत्वाशीतिः२३
१६. सम्यग्ज्ञान चन्द्रिका की पीठीका
१७. योगसार गाथा ३५
१८. केवलिपण्णत्तो धम्मो मंगलम्, केवलिपण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमो, केवलिपण्णत्तं धम्मं सरणं पव्वज्जामि।
१९. आगम में निरंतर लगी हुई बुद्धी मुक्तिरूपी स्त्री को प्राप्त करने में दूती समान है, इसलिए भवभीरू भव्यजीवों को यत्नपूर्वक अपनी बुद्धी शास्त्र अध्ययन, श्रवण, मनन आदि में लगाना चाहिए। – योगसार प्राभृत श्लोक ७६
२०. सभी को सुख चाहिए, वह मोक्ष में, मोक्ष निर्जरा से, वह संवर से, वह सम्यग्दर्शन से, वह भेदविज्ञान से, वह स्वाध्याय से। – रयणसार गाथा ९०
२१. भगवती आराधना –१ गाथा ६, पृष्ठ ४
२२. ना भून्तास्ति ..... सिद्धये – अनगार धर्मामृत अध्याय ३, श्लोक ३३
२३. इष्टोपदेश गाथा ३३ टीका 'गुरु....निरन्तरम्'
२४. मूलाचार श्री कुंदकुंदाचार्य गाथा ११ (प्रत्याख्यान अधिकार)
२५. मूलाचार आचार्य वट्टकेर गाथा ८ (संक्षेप प्रत्याख्यान अधिकार)
२६. अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोग भावना पृष्ठ २४४, स्वाध्याय करने से लाभ पृष्ठ ३४४ – श्री रत्नकरण्ड श्रावकाचार